A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

ग्वालियर घराने की ख़्याल गायन परंपरा के अंतर्गत कलाकारों द्वारा रचित बंदिशों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Stuti Khamparia
Research Scholar, Department of Music, Dr. Harisingh Gour University, Central University, Sagar, Madhya Pradesh

Read the Article Online

OPEN ACCESS

Cite this Article

Published on 21 June, 2026

Khamparia, S. (2026). gwalior gharane ki khyaal gayan parampara ke antargat kalakaron dwara rachit bandishon ka vishleshnatmak adhyayan. Swar Sindhu, 14(1), 448-451.

सार

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत जो भारत के कला एवं संस्कृति का सूचक है इसकेवर्तमान स्वरूप का आधार वेदों से आरंभ माना जाता है जो आते आते वर्तमान में खयाल के रूप में प्रचलित है शास्त्रीय संगीत के विभिन्न रूपों का सार आज के घराने है जिनमें ग्वालियर घराने को भारतीय संगीत के असीम योगदान के लिए जाना जाता है इस घराने में कई ऐसे कलाकार हुए जिन्होंने इसकी गरिमा शुद्धता स्पष्टता को बनाए रखा और साथ साथ अपनी मौलिकता को स्थापित किया। इस शोध पत्र के अंतर्गत ग्वालियर परंपरा के संगीतकारों पंडित विष्णुनारायण भातखंडे ,बालकृष्ण बुवा इचलकरंजीकर , राजा भैया पूछवाले, पंडित काशीनाथ बोडास आधुनिक बंदिशकार पंडित शंकर अभ्यंकर जी आदि के माध्यम से रची हुई बंदिशों के साहित्यिक, संगीतिक चक्षुओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया है। बंदिशे न सिर्फ राग का आधार होती हैं वरन उस परंपरा के सौंदर्य का सूचक भी होती हैं इस शोध के कुछ ऑनलाइनमाध्यमों का भी सहारा लिया जाएगा यह शोध पत्र आधुनिक शोधार्थियों विद्यार्थियों एवं अन्य रसिक जनों के लिए ग्वालियर की बंदिशों के विषय में गहन अध्ययन करनेका माध्यम बन सकता है।

शोध प्रविधि : ऐतिहासिक, वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि।

***कुंजी शब्द** : हिंदुस्तानी संगीत, ग्वालियर घराना, कलाकार बंदिश*

प्रस्तावना

ख्याल हिंदुस्तानी संगीत की वह संरचना जिसके माध्यम से राग का विस्तार एवं उसके सौंदर्य को स्वर एवं ताल सामंजस्य के साथ उत्कर्ष आनंद की प्राप्ति की जाती है विभिन्न विद्वानों ने खयाल की परिभाषा दी ही खयाल को एक शब्द में कहें तो विचार। "आजकल शास्त्रीय गायन का पर्याय ही खयाल गायन बन गया है।"[1] यह खुली शैली के रूप में है जिसमें गायक कलाकार को राग के अंतर्गत नियमानुसार अपनी सृजनात्मकता दर्शाने की खुली छूट होती है। यू तो खयाल के विभिन्न घराने हैं परंतु ऐसे बहुत कम होंगे जो ग्वालियर घराने की ख्याति से परीचित न हो। ग्वालियर घराने का इतिहास इसकी वर्तमान व्यापकता की आधारशिला है ग्वालियर का इतिहास में सर्वप्रथम तोमर वंश का नाम आता है "तोमर वंश के पूर्व का कल सांगीतिक दृष्टि से अंधकार पूर्ण रहा।" [2] ग्वालियर घराने के पूर्व तानसेन परंपरा कही जाती थी पश्चात मानसिंह तोमर ने इसके (ध्रुपद शैली) विकास में चार चांद लगा दिए। समय बीतता गया भारतीय शास्त्रीय संगीत ने समय के अनेक उतार चढ़ावो का समाना किया फिर आया समय मुहम्मद शाह रंगीले का। "मुगलों के पतन के ठीक पूर्व मुगल बादशाह मोहम्मद शाह रंगीले के काल में संगीत को एक बार फिर से संवारा और संभाला गया।"[3] इनके दरबार सदारंग (नियामत खां), अदारंग (फिरोज खां) गायक के तौर पर सेवा में थे। " सदारंग ही वर्तमान खयाल गायन शैली के जन्मदाता और आविष्कारक थे"[4]

ग्वालियर घराने के ख़्याल की साहित्यिक विशेषताएं :

ग्वालियर घराने को बंदिशों में स्पष्टता सरलता एवं साहित्यिक सौंदर्य विद्यमान रहता है केवल बंदिश को गाने से राग के मूल तत्व को समझा जा सकता है जैसे कुछ विशिष्टता नीचे दी गई है

अष्टांग गायकी :

अष्टांग गायकी जिस गायकी में आठ गुणों का समावेश हो

आलाप, बोल-आलाप, तान, बोल-तान, मींड, गमक, खटका और मुर्की ये सभी अष्टांग गायकी के अंतर्गत आते हैं ग्वालियर को बंदिशों में ये सभी समाविष्ट है। "ashtaanga pradhaan as it pays attention to various aspects such as alap, bol-alap, taan-varieties, layakari, meend, gamak, murki, bahlawa and other embellishment."[5]

लय की विशेषता :

ग्वालियर घराने की एक विशेषता है लय के साथ सामंजस्य। इस घराने में लय को लेकर बहुत सटीकता से और स्पष्टता से बंदिश को रखा जाता है अन्य घराने विलंबित खयाल , अति विलंबित, विलंबित में बंदिश गाते हैं है परंतु ग्वालियर में विलंबित से थोड़ी लय बढ़ाकर विलंबित गायन किया जाता है इस घराने में तीनताल को विलंबित से थोड़ी अधिक लय बढ़ाकर बंदिश को गाया जाता है एवं झुमरा तिलवाड़ा जैसे तालों के साथ भी यही लय होती है और यही ग्वालियर की परंपरा भी रही है।

गायन शैली के साथ-साथ शब्दों और स्वरों पर भी ध्यान :

इस घराने में इस प्रकार की बंदिश रची गई जिनमें शब्दों एवं स्वरों का सुंदर समन्वय दिखता है मुखडे का गायन इतना सटीकता से निर्धारित किया जाता है जिसमें आलापो बोलालापों , तानो ,बोलतानो का प्रयोग बंदिश के शब्दों के साथ ही बहुत सुंदर दिखाई देता है गाने के रास्ते खुल जाते हैं एवं बंदिश एक नए प्रभाव के साथ प्रस्तुत होती हुई दिखाई देती है जो इसकी मौलिकता को दर्शाता है।

ग्वालियर घराने के कलाकार एवं उनकी ख्याल गायन परंपरा के अंतर्गत रचित बंदिशें का विश्लेषण :

कहा जा सकता है कि ग्वालियर घराने की परंपरा बहुत लंबी है एवं उनके कलाकारों की बात की जाए तो बहुत सारे नाम सामने आते हैं सभी कलाकारों ने अपनी अपनी आहुति इस घराने को अर्पित की है और वह आहुतियां उनकी रचनाओं एवं उनकी बंदिशें के रूप में आज हमारे सामने है

पंडित विष्णु नारायण भातखंडे :

पंडित विष्णु नारायण भातखंडे आधुनिक समय के उत्तर भारतीय हिंदुस्तानी संगीत के दूतावाहक बने उन्होंने आधुनिक समय में संगीत के उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने 10 थाटों की रचना की जो पंडित व्यंकटमुखी के 72 थाटों का ही स्वरूप था जिससे संगीत को समझने में आसानी हुई ।उनका जन्म 10 अगस्त 1860 को मुंबई के बल्केश्वर में हुआ था ।

राग यमन तीनताल मध्य लय

"स्थायी– ये री आली पिया बिन

सखी कल न परत मोहे

घरी पल छिन दिन

अंतरा – जब तें परदेस गवन कीनो

रतियाँ कटत मोरी तारे गिन गिन "[6]।

बंदिश की स्थाई में एक सखी दूसरी सखी से कह रही है कि पिया के बिना मुझे चैन नहीं आता सखी कल ना परत मोहे घरी पल छिन दिन , एक-एक घड़ी एक एक पल, जब तें पिया परदेस गवन कीनो जब से पिया परदेश गए हैं रतिया कटत मोरी तारे गिन गिन, तारों को देखते देखते मेरी रात कट रही है इस बंदिश का उल्लेख पंडित भातखंडे जी ने अपनी पुस्तक में किया है वे ग्वालियर घराने से ताल्लुक़ रखते थे बंदिश का भाव ग्वालियर की गायकी के लिए सटीक है आज कई कलाकार चाहे भी किसी भी घर आने के हो इसे गाते हैं यह बंदिश बहुत पुरानी है परंतु आज भी इसमें जीवंतता है ।

राग हमीर में राजाभैया पूछवाले जी द्वारा रचित :

पंडित राजाभैया पूछवाले का जन्म 12 अगस्त 1882 को हुआ , उनकी कुछ सांगीतिक कृतियाँ तानमालिका ठुमरी और तरंगिनि,संगीतोपासना, प्रसिद्ध थे। उन्हें 1956 में वे ध्रुपद ओर धमार गाते थे । उन्हें संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया । उनकी मृत्यु 1956 में हुई।

स्थायी – "चमेली फूली चंपा

अंतरा – गुलाब हीरा मोतियन को सेरा "[7]

इस बंदिश की खास बात क्षेत्रीय भाषा के शब्द इतनी सुंदरता से संजोए है कि बोलालाप बोलतान के लिए सटीक शब्द हो जैसे यह बंदिश झुमरा विलंबित को बंदिश है ताल के साथ इसके भाव भी सुंदर हैं। उन्होंने इसके साथ बोल आलाप और बोल तानो का भी लिपिबद्ध वर्णन किया है। ओर स्पष्टता दिखाई देती है और स्पष्टता तो ग्वालियर घराने को विशेषता है।

पंडित विष्णुदिगंबर पलुस्कर जी

इनका जन्म 18अगस्त 1872 को कुरून्दवाड़ नामक स्थान पर हुआ वे बचपन से संगीत प्रेमी थे उनके पिता कीर्तनकार थे इसलिए बचपन से ही उनका लगाव संगीत के प्रति रहा जीवन के एक घटना ने उनका जीवन परिवर्तित करके रख दिया उनकी एक घटना के चलते आँखों की रोशनी चली गई उसके बाद भी वे आज हिंदुस्तानी संगीत का चमकता सितारा हैं उनके गुरु पंडित बालकृष्ण बुवा इचलकरंजीकर थे। उन्होंने कई शिष्य तैयार किये एवं कई पुस्तके लिखी जो भारतीय संगीत को उनकी अमूल्य देन है उन्होंने सर्वप्रथम संगीत का गंधर्व महाविद्यालय खोला एवं हमेशा संगीत का प्रचार प्रसार किया तथा आधुनिक समय में उनकी स्वरलिपि एवं ताल लिपि का अध्ययन किया जाता है। उनकी एक रचना :

"उधो करमन की गति न्यारी। सब नदिया जल भरभर रहिया सागर किस विध खारी ॥ उज्वल

पंख दिये बगुलाको कोयल किस विधकारी। सुंदर नयन दिये बगुलाको बनबन फिरत उजारी ॥

मूरख मूरख राजे कीने। पंडित फिरत भिखारी ॥ सूरश्याम मिलनेकी आशा। छिनछिन बीतत भारी ॥"[8]

पंडित पलुस्कर जी द्वारा रचित रचना में तीनताल का प्रयोग किया गया है ऊधो करमन की गति न्यारी अर्थात इस बंदिश में कर्मों के विवेचन बड़े सुंदर ढंग से किया गया है साहित्य के साथ राग काफी में यह यह बंदिश आम जनता को भी आसानी से समझ आ सकती है सूरदास जी के भाव को उन्होंने अपने सांगीतिक विचारों में प्रकार इसमें चार चांद लगा दिए हैं

पंडित ओंकार नाथ ठाकुर

पंडित जी का जन्म 24 जून 1897 हुआ वे हिंदुस्तान के संगीतज्ञ , साहित्यचार्य, रचनाकार गायक कलाकार आदि थे ग्वालियर घराने के पंडित ओंकारनाथ ठाकुर ने पंडित विष्णुदिगंबर पलुस्कर जी से शिक्षा प्राप्त की उन्हें संगीत मार्तंड की उपाधि प्राप्त है। उनकी मृत्यु 29 दिसंबर सन् 1967 को हुई उनकी पुस्तकें प्रणव रंग के नाम से विख्यात हैं। पंडित ओंकारनाथ ठाकुर की एक रचना राग भूपाली में :

"स्थाई – प्रथम नमन गया नायक चरणा, अमित विधन अरु मति अम इरणा।

अंतरा–संगीत शास्त्र पढ़न चाहते हों, बुद्धि बल देहु में तुमरे ही शरणा"[9]

बंदिश में बृज भाषा के सुंदर शब्दों का प्रयोग किया गया साथ ही संस्कृत शब्दों जैसे मम अम इरणा इस प्रकार बृज पर संस्कृत का सुंदर समन्वय परिलक्षित हो रहा है। वंदना के रूप में यह बंदिश स्थाई अंतरे के साथ शास्त्रीय संगीत के नियम के अनुसार है। ओर तीनताल में निबद्ध भी है। स्थायी में पंडित जी ने भगवान श्री गणेश की आराधना की है प्रथम नमन उनके चरणों में किया है साथ ही मां सरस्वती को प्रणाम किया है अंतरे में उन्होंने तार के स्वरों में प्रार्थना की है कि वे संगीत शास्त्र पढ़ना चाहते हैं इस हेतु बुद्धि एवं बल प्रदान कीजिए इस प्रकार उनके भाव इस बंदिश में दिखाई पड़ते हैं।

आधुनिक बंदिशकार के रूप में

एवं सितार वादक के रूप में पंडित शंकर अभ्यंकर जी ,उन्होंने आधुनिक समय को ध्यान में रखते हुए एवं परंपरा को समझते हुए कई बंदिशों का निर्माण किया है जिन्हेंआज कई गायक कलाकार अपना रहे हैं एवं प्रस्तुत कर रहे हैं जिनमें से एक राग जोगकोंस में रचित बंदिश जो विदुषी आरती अंकलीकर जी द्वारा गाई गई हैपंडित शंकर अभ्यंकर एक सितारवादक, बंदिशकार एवं संगीतज्ञ हैं उन्होंने ग्वालियर घराने को पंडित नारायणराव व्यास व पंडित शंकरराव व्यास के मार्गदर्शन में शिक्षाप्राप्त की ।उन्होंने गजानन बुवा जोशी से भी ज्ञान प्राप्त किया। उनके द्वारा रचित बंदिशों में

लयकारी का सुंदर समन्वय दिखाई पड़ता है साथ ही उनके सितार में पंडित रविशंकर जी एवं पंडित विलायत खान जी की वादन शैली का भी प्रभाव देखा जा सकता हैं।

स्थायी : "मंदर तेरो रे आयो

गुरुराज ज्ञान दीजो आज

अंतरा : कछु न ही जानत ज्ञान

निर्गुण हम ऐसो

गुरुराज ज्ञान दीजो आज"[10]

इस बंदिश का विश्लेषण विदुषी आरती अंकलीकार जी द्वारा गाये गये एक प्रस्तुति के माध्यम से कर रही हूँ किस तरह बंदिश में एक शिष्य अपने गुरु के चरणों में उनसेसीखने जाता है वह प्रार्थना कर रहा है कि मंदर तेरो रे आयो गुरुराज ज्ञान दीजो आज, मुझे ज्ञान दीजिए ऐसा अपने गुरु से प्रार्थना कर रहा। अंतरे में वह तार सा को छूते कह रहा है कि कछु न ही जानत ज्ञान वह कुछ नहीं जानता निर्गुण के समान है वह वापस वह कहता है कि मुझे ज्ञान दीजिए इस प्रकार बंदिश में सुंदर शब्दों का चयन एवं आम जन को भी बंदिश के बोल समझा आजाये ऐसी इस बंदिश को खासियत है तीनताल में यह बंदिश 10 वी मात्रा से उठती हुई प्रतीत हो रही है जो इसको अन्य बंदिशों से अलग बनाती है बहुत कम ऐसी बंदिशे होती है जो 10 वी मात्रा से प्रारंभ हो।

निष्कर्ष

इस शोध पत्र के माध्यम से ग्वालियर की बंदिशों का विश्लेषण लिया गया है,ग्वालियर सभी घरानों का आदि घराना माना जाता है ग्वालियर घराने की बंदिशों में परम्परा का संरक्षण , स्पष्टता और साहित्य संगीत का सुंदर समन्वय दिखाई पड़ता है इसकी परम्परा के वाहको का इसे संरक्षित करने में विशेष योगदान है उन्होंने न केवल इसे आगे बढ़ाया बल्कि अपनी सृजनात्मकता को भी इससे जोड़ के एक नया रूप प्रस्तुत किया। इस घराने की खास बात यह है कि राग की शुद्धता वादी संवादी ,स्वर लगाव लय का ध्यान ताल के अनुरूप बंदिश शब्दों का चयन आदि को विशेष रूप से ध्यान में रखा। बंदिशों में केवल चमत्कार नहीं रस सौंदर्य का भी प्रभाव दिखाई पड़ता है बंदिश रचनाकारों ने अपने उपनाम से बंदिश बनाकर , तथा कुछ कुछ बंदिशे अपनेगुरु को समर्पित कर गुरूशिष्य परंपरा को भी परिलक्षित किया। कुल मिला के बंदिशे केवल मनोरंजन नहीं बल्कि रस सौंदर्य साहित्य ,अध्यात्म,गुरुभक्ति, परंपरा, शैली,राग शुद्धता आदि इस सभी का सुंदर आचरण एवं समन्वय है जो आज के संगीत प्रेमियों , विद्यार्थियों, शोधार्थियों, अध्यापकों आदि के लिए ग्वालियर की विशेषता को दर्शाती हैं।

संदर्भ

1. तोमर , डॉ अवधेश, 2015 संगीत शास्त्र सागर , प्रकाशक कृष्ण कंप्यूटर सागर , पृष्ठ संख्या 2
2. बांगरे, अरुण,(2011) ग्वालियर की संगीत परम्परा, प्रकाशक कनिष्क पब्लिकेशन पृष्ठ संख्या 2
3. बांगरे ,अरुण, (2011) , ग्वालियर की संगीत परम्परा, प्रकाशक कनिष्क पब्लिकेशन पृष्ठ संख्या 16
4. बांगरे, अरुण (2011) ग्वालियर की संगीत परंपरा , प्रकाशक कनिष्क पब्लिकेशन पृष्ठ संख्या 16
5. मिश्रा, सुशीला (1984), The Gwalior gharana of khayal, digitallibraryindia.jaigyan, पृष्ठ संख्या 10
6. भातखंडे, पं विष्णु नारायण, (1956) क्रमिक पुस्तक मालिका, प्रकाशक संगीत कार्यलय हाथरस पृष्ठ संख्या 35,36
7. पूछवाले, राजाभैया (1936) , तानमालिका, प्रकाशक राजाभैया पूछवाले प्रिंसिपॉल माधव संगीत विद्यालय पृष्ठ संख्य 11,13
8. पलुस्कर, पंडित विष्णु दिगम्बर, (1921 संगीत बालप्रकाश , प्रकाशक गंधर्व महाविद्यालय प्रेस सैंड हर्स्ट रोड मुंबई, पृष्ठ संख्या 24
9. ठाकुर, पं. ओमकारनाथ, (1959) संगीतांजलि (प्रथम भाग) , प्रकाशक काशी हिंदू विश्विद्यालय, वाराणसी,पृष्ठ संख्या 12
10.यूट्यूब लिंक https://youtu.be/V4pxO5kht8g?si=cW-kVwL7IFBT0if8